मध्ययुगीन काव्य तथा उपन्यास साहित्य (हिंदी)

इकाई—।	कबीर के २० दोहे **i)गुरुदेव को अंग** १. सतगुर की महीमा अनंत,अनंत किया उपगार । लोचन अनंत उघाड़िया,अनंत दिखावणहार ।। २. पीछैं लागा जाइ था, लोक वेद के साथी । आगैं थै सतगुर मिल्या, दीपक दिया हाथी। ३. जाका गुर भी अंधला, चेला खरा निरंध । अंधा अंधा ठेलिया, दून्यूं कूप पडंत ।। ४. माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पडंत। कहै कबीर गुर ग्यान थै, एक आध उबरंत ।। ५. सतगुर हम सूं रीझि करि, एक कहया प्रसंग। बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग।। **ii)विरह को अंग** १. बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम । जिव तरसै तुझ मिलन कूं मनि नाहीं विश्राम ।। २. यहु तन जालौं मसि करौं, लिखौं राम नाउं । लेखणिं करूं करंक की, लिखि लिखि राम पठाउं । ३. अंषडियाँ झाई पडी,पंथ निहारि निहारि । जीभडियाँ छाला पड़या, राम पुकारि पुकारि।। ४. परबति,परबति मैं फिरया, नैंन गँवाये रोइ । सो बूटी पाऊं नहीं, जातैं जीवनि होइ ।। ५. सुखिया सब संसार है,खायैं अरु सोवै । दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै ।। **iii)माया को अंग** १. कबीर माया पापणीं, फंध लै बैठि हाटि। सब जग तौ फंधै पडया,गया कबीरा काटि। २. कबीर माया मोहनी, जैसी मीठी खाँड। सतगुर की कृपा भई, नही तौ करती भांड़।। ३. माया मुईन मन मुवा ,मरि मरि गया सरीर । आसा तिष्णाँ नाँ मुई ,यौं कहि गया कबीरा।। ४. कबीर सो धन संचिए, जो आगैं कूं होई। सीस चढाए पोटली, ले जात न देख्या कोई।। ५. कबीर माया मोह की, भई अँधारी लोइ। जे सूते ते मूसि लिये, रहे बसत कूं रोइ ।। **iv)निंद्या को अंग** १. निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ। बिन साबण पाँणी बिना,निरमल करै सुभाइ।। २. कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोइ। आप ठग्याँ सुख ऊपजैं, और ठग्या दुख होइ।।

	v)कथनी बिना करनी को अंग १. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा ,पंडित भया न कोइ । एकै अषिर पीव का,पढै सु पंडित होइ ।। **vi)भेष को अंग** १. तन को जोगी सब करै, मन कों बिरला कोइ। सब सिधि सहजै पाइए, जे मन जोगी होइ । २. माला फेरत जुग भया, पाय न मन का फेर । कर का मनका छाँड़ि दे, मन का मनका फेर।। **अध्यनार्थ विषय:** • कबीर का व्यक्तित्व • कबीर की प्रगतिशीलता • कबीर की भक्तिभावना • कबीर का समाजसुधार • कबीर की भाषा • भावपक्ष, शिल्पपक्ष का अध्ययन।
इकाई—।।	मीराबाई के १० पद (आरंभ के १० पद) १. मण थें परस हरि रे चरण ।। २. तनक हरि चितवां म्हारी ओर ।। ३. म्हारो गोकुल रो ब्रजवासी ।। ४. हे मा बड़ी बड़ी अंखियान वारो, सांवरो मो तन हेरत हंसिके ।। ५. हेरि मा नंद को गुमानी म्हारे मनड़े बस्यो।। ६. थारो रुप देख्यां अटकी।। ७. निपट बंकट छब अंटके।। ८. म्हा मोहणो रुप लुभाणी ।। ९. संवरा नंद नंदन,दीठ पड्यां माई।। १०. आली री म्हारे णेणां बाण पड़ी।। अध्यनार्थ विषय : • मीराबाई का व्यक्तित्व,कृतित्व • मीराबाई की भक्ति • मीराबाई का प्रगतिशीलता • मीराबाई की भाषा • भावपक्ष,शिल्पपक्ष का अध्ययन।

इकाई—।।।	उपन्यास : स्वरुप ,तत्व। उपन्यास कृति : एक पत्नी के नोटस —ममता कालिया लेखक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कथ्यगत अध्ययन,शिल्पगत अध्ययन।